Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

सुगम संगीत में वाद्यों की भूमिका

AMIT ANAND
Teaching Assistant (Tabla), Institute of Music And Fine Arts, University of Jammu

सारांश : *संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों कलाओं का ही समावेश है। जहां गायन को श्रेष्ठ माना गया है वहीं वादन और नृत्य को भी विशेष महत्त्व दिया गया है और यह तीनों कलाएं एक दूसरे के सहयोग से ही अपने आप को भी अभिव्यक्त करने में सक्षम हो पाती हैं। गायन के लिए वादन और वाद्यों का महत्त्व प्राचीनकाल से ही रहा है। देवी-देवताओं, ऋषिओं-मुनियों से सम्बन्धित वाद्यों का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में अकसर ही मिल जाता है। इनसे सम्बन्धित चित्र और मूर्तियां भी वाद्यों की प्राचीनता का आभास कराती हैं। शिव का डमरू, संगीत की देवी सरस्वती और ऋषि नारद की वीणा, श्रीकृष्ण की वंशी प्राचीन युग में वाद्यों के महत्त्व को दर्शाते हैं। मुख्य रूप से वाद्यों को चार भागों में बांटा जा सकता है, जैसे: सुषिर वाद्य, तत्त-वितत, अनवद्ध तथा घन वाद्य। इन्हें दो भागों में भी विभक्त किया जा सकता है, एक स्वर वाद्य: हारमोनियम, सितार, वीणा, बांसुरी आदि और दूसरा ताल वाद्य: ढोलक, तबला, मृदंग आदि। सुगम संगीत में भारतीय वाद्यों के साथ-साथ पाश्चात्य संगीत वाद्यों का भी अच्छा खासा प्रयोग देखा जा सकता है। सुगम संगीत में इस्तेमाल होने वाले कुछ वाद्यों पर यहां चर्चा करना जरूरी है, जिनका इस्तेमाल सुगम संगीत के लिए बहुत अहम है।*

मुख्य शब्द *: संगीत, हारमोनियम, तबला, सारंगी, सितार*

भूमिका

संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों कलाओं का ही समावेश है। जहां गायन को श्रेष्ठ माना गया है वहीं वादन और नृत्य को भी विशेष महत्त्व दिया गया है और यह तीनों कलाएं एक दूसरे के सहयोग से ही अपने आप को भी अभिव्यक्त करने में सक्षम हो पाती हैं। गायन के लिए वादन और वाद्यों का महत्त्व प्राचीनकाल से ही रहा है। देवी-देवताओं, ऋषिओं-मुनियों से सम्बन्धित वाद्यों का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में अकसर ही मिल जाता है। इनसे सम्बन्धित चित्र और मूर्तियां भी वाद्यों की प्राचीनता का आभास कराती हैं। शिव का डमरू, संगीत की देवी सरस्वती और ऋषि नारद की वीणा, श्रीकृष्ण की वंशी प्राचीन युग में वाद्यों के महत्त्व को दर्शाते हैं। मुख्य रूप से वाद्यों को चार भागों में बांटा जा सकता है, जैसे: सुषिर वाद्य, तत्त-वितत, अनवद्ध तथा घन वाद्य। इन्हें दो भागों में भी विभक्त किया जा सकता है, एक स्वर वाद्य: हारमोनियम, सितार, वीणा, बांसुरी आदि और दूसरा ताल वाद्य: ढोलक, तबला, मृदंग आदि। सुगम संगीत में भारतीय वाद्यों के साथ-साथ पाश्चात्य संगीत वाद्यों का भी अच्छा खासा प्रयोग देखा जा सकता है। सुगम संगीत में इस्तेमाल होने वाले कुछ वाद्यों पर यहां चर्चा करना जरूरी है, जिनका इस्तेमाल सुगम संगीत के लिए बहुत अहम है।

हारमोनियम

हारमोनियम सुगम संगीत के सब से अहम साजों में शामिल है। लगभग एक सदी से हारमोनियम भारतीय संगीत में इस्तेमाल हो रहा है। जैसा कि नाम से ही जाहिर होता है कि हारमोनियम एक विदेशी वाद्य है पर जिस शिद्दत से इसका इस्तेमाल हिन्दोस्तानी संगीत में हुआ है उसे आज विदेशी वाद्य कहने में झिझक महसूस होती है। हारमोनियम को लोक संगीत से लेकर शास्त्रीय संगीत तक, फिल्मी सुगम संगीत और गैर फिल्मी सुगम संगीत में बराबर प्रयोग होते देखा जा सकता है। 20वीं शताब्दी में जब सुगम संगीत वजूद में आया तो गजल, ठुमरी गायन के साथ-साथ थिएटर में भी हारमोनियम एक अहम् साज के रूप में प्रयोग हुआ। फिल्मों में जब संगीत देने का सिलसिला शुरू हुआ तो शुरूआती दिनों में हारमोनियम, तबले आदि से की काम चलाया जाने लगा। धीरे-धीरे ग़ज़ल गायकों ने इसे और भी प्रसिद्ध कर दिया और पिछले सात-आठ दशकों से चाहे ग़ज़ल गायक हों या फिल्मी संगीतकार या गायक, सुगम संगीत के सभी कलाकारों के लिए हारमोनियम एक आधार वाद्य के रूप में उभर कर सामने आया है। सुगम संगीत के साथ साथ संगीत के विद्यार्थियों के लिए जहां ये उपयोगी सिद्ध हुआ है, वहीं छोटे से लेकर बड़े शास्त्रीय गायकों ने इसे अपने मंचों और महफिलों की शान बनाया है। सुगम संगीत की ग़ज़ल गायकी में जैसे-जैसे पुरुष गायकों का वर्चस्व बढ़ा तो हारमोनियम का प्रयोग अपने एक नए अंदाज में लोगों के सामने आया। इससे पहले हारमोनियम एक संगत करने के लिए ग़ज़ल और ठुमरी के लिए इस्तेमाल होता था। लेकिन मेंहदी हसन, गुलाम अली, जगजीत सिंह, अनूप जलोटा, चन्दनदास व बहुत से अन्य ग़ज़ल गायकों ने अपने साथ खुद हारमोनियम बजाकर ग़ज़ल गाने का जो अंदाज विकसित किया वह बहुत लोकप्रिय हुआ। संगीतकारों ने समय-समय पर गीतों में हारमोनियम का प्रयोग तो किया ही है और इससे भी बड़ी, सुगम संगीत में प्रचलित ज्यादातर धुनें

हारमोनियम पर ही कम्पोज होती है। यह कहना कोई गलत न होगा कि सुगम संगीत की अनेकों लोकप्रिय धुनों का जन्म हारमोनियम की सहायता से ही सम्भव हो पाया है और इस तरह सुगम संगीत में हारमोनियम की देन सुगम संगीत के लिए अविस्मरणीय है।

तबला

तबला हिन्दोस्तानी संगीत का सबसे महत्त्वपूर्ण तालवाद्य है। उत्तरी भारतीय संगीत में इस साज को बेहद लोकप्रियता हासिल हुई है। आज शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत सभी में इस वाद्य ने अपनी श्रेष्ठता बनाई हुई है। इस वाद्य की लोकप्रियता का अन्दाजा इस बात से किया जा सकता है कि ये साज केवल संगत के रूप में ही इस्तेमाल नहीं होता, बल्कि स्वतन्त्र वादन के क्षेत्र में भी तबला वादन ने उल्लेखनीय प्रगति की है। इसके बाकायदा घराने और वादन-शैलियां हैं जिन्हें बाज कहा जाता है जैसे- दिल्ली, पंजाब, अजराड़ा, फरूखाबाद, बनारस, बाज आदि। इस साज की यही खूबसूरती है कि शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ सुगम संगीत में जिस ढंग से इसका प्रयोग हुआ है वह कमाल का है। फिल्मी सुगम संगीत के अनेक गीतों में शान्ता प्रसाद और ज़ाकिर हुसैन जैसे महान् तबला वादकों ने भी इन्हें सजाया है। संगीतकारों ने तबला और उसके साथ अन्य वाद्यों के प्रयोग से फिल्मी सुगम संगीत में नवीनता पैदा करने की कोशिश की है। तबले पर कहरवा, दादरा, रूपक आदि तालों के प्रकारों को नए-नए रूप देकर फिल्मी गीतों में लय ताल के सौन्दर्य को अभिव्यक्त किया गया है। ग़ज़ल गायन शैली में तो हारमोनियम और तबला की संगत महफिलों की रंगत और रौनक बढ़ा देती है। स्थाई और अन्तरे के दौरान जो अंतराल होता है उसमें तबला वादक अपने कला और कौशल से लग्गी लड़ियों और तिहाईयों द्वारा ग़ज़ल की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। पिछले कई दशकों से ग़ज़ल में तबला वादन ने अपना खास मुकाम बनाया हुआ है चाहे महफिली गजलें हों या रिकार्डिड, इस वाद्य की जरूरत तो पड़ती ही है। आजकल ग़ज़ल गायकी में तबले के साथ-साथ, ढोलक, नाल, कोंगो-बोंगों या ओक्टो पैड का प्रयोग भी रिद्म (ताल) के लिए कर लिया जाता है। आम तौर पर स्टुडियो में रिर्काडिड ग़ज़लों और फिल्मी ग़ज़लों में तबले के साथ-साथ अन्य ताल वाद्यों का प्रयोग आम बात हो गई है। एक ही ग़ज़ल की सांगीतिक प्रस्तुति में कई बार तीन तबलों को तीन अलग स्वरों पर मिलाकर बारी-बारी से बजाया जाता है जिससे तबले से अलग-अलग ध्वनियां निकलती हैं जो स्वर संवाद के अनुरूप बहुत ही कर्णप्रिय होती है। तबला वादन के इस तरीके में तबलों को तार सप्तक षडज, मध्य सप्तक पंचम अथवा मध्यम स्वर पर मिलाया जाता है। इस तरह यह वाद्य केवल शास्त्रीय संगीत में ही नहीं बल्कि सुगम संगीत में भी एक आधार तालवाद्य के रूप में स्थापित हो चुका है और सुगम संगीत की कोई भी विधा हो, वह इस वाद्य के बिना अधूरी ही नजर आएगी।

सारंगी

सुगम संगीत में सारंगी वाद्य का भी प्रयोग विशेष रुप से हुआ है। विशेषकर ग़ज़ल गायकी के साथ तो इसका पुराना और पारम्परिक सम्बंध है। ख्याल, ठुमरी की संगत के लिए तो यह वाद्य प्रयोग होता ही था पर जैसे-जैसे ग़ज़ल गायकी का उदय हुआ सारंगी का शुरु से ही इसके साथ नाता जुड़ गया। परम्परागत अंदाज में ग़ज़ल गाने वाले गायक और गायिकाओं ने अपने साथ सारंगी का अच्छा खासा प्रयोग किया है। फिल्म संगीत में भी गीतों और गजलों में सारंगी का इस्तेमाल बाखूबी हुआ है। ग़ज़लों में उदासी और गम्भीरता का वातावरण पैदा करने के लिए भी सारंगी का इस्तेमाल सुगम संगीत की गायन विधाओं में हुआ है। इकबाल बानों, मेंहदी हसन, फरीदा खानम, बेगम अख्तर, आदि ग़ज़ल गायकी के फनकारों ने अपनी गायकी के साथ सारंगी की संगत अनेकों गजलों की महफिलों में करवाई है। इस वाद्य की यह विशेषता है कि इसे गायन के सब से अधिक निकट माना जाता है और इस में गायन की लगभग सभी विशेषताओं को दिखाया जा सकता है। यह साज धनुषाकार 'गज' या 'बो' से बजाया जाता है गज दाएं हाथ से थामा जाता है और स्वर निकालने के लिए बाएं हाथ की पहली दूसरी और तीसरी उंगुली के नाखूनों का उपयोग किया जाता है। वायलिन के समान इसके तारों पे उंगुलियों के किनारों पर नाखुन की सहायता से दबाव डाला जाता है। यह वाद्य बजाने में कठिन है इसके वादन के लिए बरसों साधना की आवश्यकता पड़ती है। जिसके कारण सारंगी वादकों की संख्या कम होती जा रही है। सुगम संगीत जैसी गायन शैलियों के साथ इसका गहरा सम्बन्ध है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

वायलिन

सारंगी की तरह ही एक और साज वायलिन जो गज से बजाया जाता है और जिसने वर्तमान हिन्दुस्तानी संगीत में अपनी खूबसूरत ध्वनि तरंगों से खूब धूम मचाई है। वायलिन का प्रयोग फिल्म संगीत हों या गजलें या शास्त्रीय संगीत सभी क्षेत्रों के कलाकार इसे पसंद भी करते हैं और इसका भरपूर उपयोग भी करते हैं। भारतीय संगीत की संस्कृति में वाइलिन का महान् योगदान है। हारमोनियम व वाइलिन भारतीय संगीत की दो भुजाएं है। पूरे फिल्म जगत् में जो अच्छी धुनें बनी हैं, चाहे वे शास्त्रीय संगीत पर आधारित हों या सुगम संगीत पर उनमें वाइलिन की उपादेयता सिद्ध होती है। फिल्म संगीत में तो गीतों के अन्तराल को भरने के लिए वाइलिन वाद्य का खूब इस्तेमाल हुआ है। सारंगी की तरह महफिलों में ग़ज़ल गायन के साथ वाइलिन की संगत भी सुनने को मिलती है। वर्तमान समय में वाइलिन, सारंगी की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हुआ है। उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इसकी आवाज सारंगी की अपेक्षा कम गम्भीर है और इसमें मधुरता और आकर्षण अधिक है। इसका वादन भी सारंगी की अपेक्षा कुछ हद तक आसान है। वायलिन की उपयोगिता और लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से भी किया जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ-साथ यह वाद्य दक्षिणी संगीत में भी लोकप्रिय हो चुका है।

गिटार

गिटार एक ऐसा विदेशी वाद्य है जिसे आज हिन्दुस्तानी संगीत में बहुत अधिक महत्त्व प्राप्त है। फिल्म संगीत में गिटार की भिन्न-भिन्न किस्मों का इस्तेमाल सभी संगीतज्ञों ने किया है। वाइलिन की तरह फिल्मी सुगम संगीत की बैकग्राउंड म्युजिक और गीतों के अंतराल के दौरान दिए गए संगीत को भरने के लिए गिटार का खूब इस्तेमाल हुआ है। फिल्मी सुगम संगीत के साथ-साथ सुगम संगीत के गायकों ने अपने गीतों, ग़ज़लों के दौरान गिटार को खास अहमियत दी है। सुगम संगीत में इसकी उपयोगिता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब बहुत से ग़ज़ल गायक को महफिलों में कुछ साजों से ही काम चलाना हो, तो वे हारमोनियम, तबला और गिटार के साथ ही अपनी बहुत-सी महफिलों को सजा लेते हैं। जगजीत सिंह, चंदन दास, अनूप जलोटा, पंकज उधास आदि ग़ज़ल गायकों की रिकार्डिंड ग़ज़लों और महफिली कार्यक्रमों के दैरान गिटार वाद्य के प्रभावशाली प्रयोग को खूब सुना जा सकता है। गिटार वाद्य की ध्वनि आकर्षण ने ग़ज़ल और गीत गाने वाले गायकों को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि कई गिटार वादकों ने शास्त्रीय संगीत में रागों का स्वतन्त्र वादन करके भारतीय संगीत में गिटार और अपने नाम को लोकप्रिय किया है।

सितार

सितार हिन्दोस्तानी संगीत में सब से महत्त्वपूर्ण वाद्यों में से एक है। जिसने भारतीय संगीत को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने में अपनी विशेष भूमिका निभाई है। फिल्म संगीत में सितार का प्रयोग लगभग सभी बडे संगीतकारों ने किया। हर्ष, उल्लास, करुणा, दया, ममता, स्नेह आदि विशिष्ट भावों की अभिव्यक्ति के लिए संगीतकारों ने इसे पृष्ठभूमि संगीत के दौरान, गीतों के अन्तराल में वाद्य संयोजन के दौरान बड़े आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया है। सुप्रसिद्ध संगीतकार मदन मोहन के अनेकों गीतों में सितार के अनेकों सृजनात्मक प्रयोगों को सुना जा सकता है। इसी तरह अन्य संगीतज्ञों ने भी सितार की अहमियत को समझा है। इसीलिए पं. रविशंकर, उ. अब्दुल हलीम जाफर खां, पं. निखिल बैनर्जी जैसे बड़े नाम भी फिल्म संगीत के लिए सितार वादन कर चुके हैं। ग़ज़ल गायन के दौरान भी रिकार्डिंग सीडीज़ और कैसेट्स में सितार के प्रयोग को सुना जा सकता है। ग़ज़ल गायन में सितार का प्रयोग अक्सर किया जाता है। इसका प्रयोग गाने के साथ-साथ नहीं होता है। गायक जब सांस लेने के लिए कुछ क्षण चुप रहता है तो उस खाली जगह को भरने के लिए तथा मतले और शेयर के बीच के अन्तराल में जब संगीत बजाया जाता है तब साज का उपयोग किया जाता है। इस वाद्य की ध्वनि एक साधारण श्रोता को भी अपनी ओर बड़ी जल्दी आकर्षित कर लेती है। इसी कारण यह शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ सुगम संगीत में भी लोकप्रिय है।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि सुगम संगीत में वाद्यों की भूमिका शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा अधिक है। सुगम संगीत के गीतों, गजलों, की संगत, सांगीतिक अन्तराल में और बैकग्राऊंड म्युजिक के रूप में वाद्य अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गीतों को भावात्मक, मधुर और आकर्षक बनाने में वाद्य संयोजन के स्थान को किसी भी तरह नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता।

संदर्भ

1. पंकज राग, धुनों की यात्रा, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2007
2. डॉ. संगीता सिंह, उत्तर भारतीय संगीत में तंत्रवाद्यों का स्थान एवं उपयोगिता, कनिष्क पब्लिशर्ज, नई दिल्ली
3. सत्यनारायण गर्ग, भारतीय संगीत के पोषक पश्चिमी वाद्ययंत्र, संगीत, मई 2006, हाथरस संगीत कार्यालय,
4. डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1995
5. डॉ. शरतचंद्र परांजपे, संगीत बोध, प्रकाशन-नई दुनियां इंदौर, 1972,
6. सत्यनारायण गर्ग, भारतीय संगीत के पोषक पश्चिमी वाद्ययंत्र, संगीत, मई 2006, हाथरस संगीत कार्यालय,
7. रघुनाथ सेठ, सुगम संगीत: गागर में सागर, संगीत, जनवरी-फरवरी 1997